

# भाषा कुशलता का विकास: महात्मा गांधी (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालयों के विद्यार्थियों के संदर्भ में अध्ययन

\*<sup>1</sup> दीपिका कुमावत एवं <sup>2</sup>डॉ. प्रमिला दुबे

\*<sup>1</sup> शोधार्थी, शिक्षा विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

<sup>2</sup>प्रोफेसर एवं निर्देशिका, एस. एस. जी पारीक स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

## Article Info.

E-ISSN: 2583-6528

Impact Factor (SJIF): 6.876

Peer Reviewed Journal

Available online:

[www.alladvancejournal.com](http://www.alladvancejournal.com)

Received: 29/June/2025

Accepted: 28/July/2025

## सारांश:

भाषा कुशलता शैक्षिक सफलता का महत्वपूर्ण घटक है जो कि व्यक्तिगत विकास एवं शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावी करता है विशेषतः भारत जैसे बहुभाषी देश में। वैश्वीकृत दुनिया में जहां शिक्षा, व्यवस्था एवं प्रौद्योगिकी सहित विभिन्न क्षेत्रों में अंग्रेजी एक भाषा के रूप में कार्य करती है वहीं अंग्रेजी में प्रभावी तरीके से संवाद करने की क्षमता का महत्व निरंतर बढ़ रहा है, इसी महत्व को ध्यान में रखते हुए राजस्थान सरकार द्वारा वर्ष 2019 में राजकीय विद्यालयों को अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में स्थानांतरित किए जाने का साराहनीय प्रयास किया गया जिसके अंतर्गत महात्मा गांधी (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालय का जन्म हुआ। प्रस्तुत अध्ययन महात्मा गांधी (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालय के कक्षा 9 के विद्यार्थियों की भाषा कुशलता के विकास पर केंद्रित है इसमें भाषिक क्षमता में योगदान देने वाले कारकों का वर्णन किया गया है। भाषा कुशलता का विकास शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण विषय है विशेष रूप से महात्मा गांधी (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालयों के विद्यार्थियों के संदर्भ में भाषा केवल एक माध्यम नहीं अपितु सोचने, समझने तथा विचार करने तथा भावी प्रतियोगी वातावरण हेतु तैयार करने के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है।

## \*Corresponding Author

दीपिका कुमावत

शोधार्थी, शिक्षा विभाग, राजस्थान

विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

**मुख्य शब्द:** कुशलता, वैश्वीकृत, प्रौद्योगिकी, बहुभाषी

## प्रस्तावना:

किसी भी राष्ट्र की वृद्धि एवं विकास में उसकी शिक्षा का पूर्ण योगदान होता है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति के जीवन को तार्किक बनाकर भले भुजे की समझ तथा भाषा संबंधी कौशलों को विकसित किया जा सकता है। वर्तमान में शिक्षा के अंतर्गत नित नए परिवर्तन किया जा रहे हैं, जिनका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को भावी प्रतियोगी वातावरण के लिए तैयार करना होता है। इसका मुख्य घटक भाषा है, जो कि संपूर्ण शिक्षा की आधारशिला है। भाषा कौशल से तात्पर्य किसी भी भाषा में कार्य करने की समर्थता प्राप्त करना है। इसमें चार कौशलों को सम्मिलित किया गया है - सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखना। किसी भी प्राणी का भाषा ज्ञान का पता उसकी किसी भाषा के इन चारों कौशलों में समर्थता से है। भाषा एक कौशल, एक कला और एक क्रिया है। अभ्यास का भाषा सीखने में सर्वोच्च स्थान है। प्रस्तुत शोध में भाषा कौशल से आशय महात्मा गांधी (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालयों के विद्यार्थियों की भाषा संबंधी कुशलता से है। वर्ष 2019 में राजस्थान सरकार द्वारा राजकीय विद्यालय में अध्ययन के माध्यम को हिंदी से

अंग्रेजी में परिवर्तित करने का अभूतपूर्व प्रयास किया गया, जिसके परिणाम गत वर्षों तथा वर्तमान में देखे जा सकते हैं। जहां पूर्व में राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी आपसी बातचीत में हिंदी भाषा का प्रयोग करते थे वहीं वर्तमान में हिंदी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा का प्रयोग कर विद्यार्थी प्रशंसन के पात्र बन रहे हैं। जिनके भाषिक व्यवहार में विद्यालय की भाषा व्यवस्था का प्रभाव देखा जा सकता है। महात्मा गांधी (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालय में भाषा के माध्यम को आधार मानते हुए समस्त पाठ्यक्रम अंग्रेजी भाषा में परिवर्तित किया गया। भाषा के मुख्यतः ग्रहण एवं अभिव्यक्ति स्वरूप को केंद्र बिंदु में रखा गया है। भाषा के कौशलों के अंतर्गत सुनना (श्रवण), बोलना (वाचन), पढ़ना (पठन) तथा लिखना (लेखन) कौशलों को सम्मिलित किया जाता है।

## अध्ययन पृष्ठभूमि

मल्लिक, स्वप्ना (2012) द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य "दक्षिण भारत में हिंदी भाषा के कौशल शिक्षण के संदर्भ में प्रचलित वर्तमान प्रविधियां - एक

आलोचनात्मक अध्ययन (बेंगलुरु महानगर के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कन्नड़भाषी छात्रों के विशेष संदर्भ में) के अंतर्गत शोधकर्त्ता द्वारा न्यादर्श हेतु बेंगलुरु के उच्च माध्यमिक विद्यालयों से कुल 50 हिंदी अध्यापक तथा 500 कन्नड़भाषी हिंदी छात्रों को क्षेत्र तथा गुच्छ प्रति चयन विधि से चुना गया। शोध में निष्कर्षतः पाया गया कि शिक्षकों द्वारा कक्षा में श्रवण कौशल को विकसित करने हेतु पाठ अथवा कविता का आदर्श पठन किया जाता है ताकि विद्यार्थियों को सुनने का पर्याप्त अनुभव हो साथ ही विद्यार्थियों की वाचन संबंधी अशुद्धता का तत्काल सुधार किया जाता है कक्षा में सख्त पठन करा कर पठन संबंधी अशुद्धियों का भी तुरंत समाधान किया जाता है साथ ही लेखन कौशल के विकास हेतु लेखन प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाता है।

- शर्मा, शशि (2013) के द्वारा प्रस्तुत शोध "ए कंपैरेटिव स्टडी ऑफ इंग्लिश कम्युनिकेशन स्किल ऑफ स्टूडेंट्स स्टडीइंग इन गर्वनमेंट एंड प्राइवेट स्कूल" में शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श हेतु गाजियाबाद के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 300 विद्यार्थियों का कलस्टर याद्विक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया। निष्कर्षतः पाया गया कि निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अंग्रेजी भाषा में संचार कौशल पढ़ना, बोलना इत्यादि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर है।
  - वाघ, विजय (2019) के द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र "हिंदी भाषा और भाषा कौशल" के अंतर्गत व्यावहारिक, प्रयोगात्मक तथा तकनीकी क्षेत्र में प्रयुक्त कौशल के साथ-साथ भाषा कौशल के चार प्रकार - वाचन कौशल, श्रवण कौशल, लेखन कौशल तथा पठन कौशल (LSRW) पर प्रकाश डाला गया। साथ ही भारत में हिंदी भाषा के स्थान को दर्शाया गया है। पत्र में उपर्युक्त कौशलों को विस्तार से प्रस्तुत किया गया।
  - रेनू (2019) द्वारा प्रस्तुत शोध आलेख "विद्यार्थियों में हिंदी भाषा में प्रवीणता के लिए कौशलों का महत्व" में निष्कर्ष पाया गया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भाषा कौशलों - श्रवण कौशल, कथन कौशल, पठन कौशल तथा लेखन कौशल (LSRW) के द्वारा हिंदी भाषा में प्रवीणता प्राप्त की जा सकती है।
  - खांसोच, मोहम्मद एवं अहमद, सलीम (2021) द्वारा प्रस्तुत शोध "लैंग्वेज स्किल्स एंड देयर रिलेशनशिप टू लर्निंग डिफिकल्टीज इन इंग्लिश लैंग्वेज फ्रॉम द स्टूडेंट्स पॉइंट ऑफ व्यू" के अंतर्गत शोधार्थी द्वारा न्यादर्श स्वरूप दक्षिण पश्चिम संयुक्त राज्य अमेरिका के विद्यालयों में अध्ययनरत 300 विद्यार्थियों का स्तरीकृत याद्विक विधि द्वारा चयन किया गया। निष्कर्षतः पाया गया कि विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा से संबंधित सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखना (LSRW) कौशल में कमज़ोरी का सामना करना पड़ता है। अधिकांशत विद्यार्थी भाषा सीखने हेतु शिक्षकों पर निर्भर रहते हैं।
  - सैयद, तौकीर इमाम (2023) के द्वारा प्रस्तुत शोध "क्रिटिकल थिंकिंग एंड लिंग्विस्टिक एबिलिटीज एल.एस.आर.डब्ल्यू. ऑफ़ चिल्ड्रन इन मदरसा एट वेस्ट बंगाल" के अंतर्गत न्यादर्श स्वरूप कोलकाता, हावड़ा तथा हुगली के उर्दू सरकारी मदरसा में अध्ययनरत माध्यमिक कक्षा के 150 विद्यार्थियों को चयनित किया गया, जिनका आयु वर्ग 14 से 17 वर्ष है। शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। साथ ही शोध के विकास हेतु वर्णनात्मक शोध पद्धति प्रयोग में लाई गई। निष्कर्षतः पाया गया कि पश्चिम बंगाल के उर्दू माध्यम सरकारी मदरसा के विद्यार्थियों की आलोचनात्मक चिंतन क्षमता एवं भाषा कौशल क्षमता सकारात्मक, एक दूसरे से सह संबंधित व महत्वपूर्ण है।
  - गोगोई, नम्रता (2024) के द्वारा प्रस्तुत शोध "इफेक्टिवेनेस ऑफ़ टास्क बेस्ड लैंग्वेज टीचिंग इन डेवलपिंग लैंग्वेज स्किल्स इन इंग्लिश अमंग क्लास 8th स्टडेंट्स" के अंतर्गत शोधकर्त्री द्वारा

सरल यादचिक नमूनाकरण विधि का प्रयोग करते हुए असम के सहशिक्षा विद्यालयों में आठवीं कक्षा के 13 वर्ष की औसत आयु के 179 विद्यार्थियों का चयन किया गया। निष्कर्षतः पाया गया की कार्य आधारित भाषा शिक्षण समग्र भाषा कौशल - सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखना (LSRW) को विकसित करने में प्रभावशाली था।

## अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत जयपुर जिले (राजस्थान) के महात्मा गांधी (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालयों में अध्ययन - अध्यापन कार्य हिंदी से अंग्रेजी माध्यम में परिवर्तित करने के फल स्वरूप विद्यार्थियों की भाषा कुशलता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त लिंग तथा क्षेत्र के आधार पर भी भाषा कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना इस शोध का उद्देश्य है। इसके अंतर्गत भाषा के सुनना (श्रवण), बोलना (वाचन), पढ़ना (पठन) तथा लिखना (लेखन) कौशलों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना इस शोध का उद्देश्य है।

**शोध विधि:** प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि द्वारा आंकड़ों का संग्रहण किया जाएगा।

**शब्दावली: भाषा कौशल:** कौशल के द्वारा किसी भी क्षेत्र से संबंधित तकनीकी, व्यवहारिक एवं प्रयोगात्मक संपादन में सहायता मिलती है प्रत्येक क्षेत्र में एक विशिष्ट कौशल का विकसित होना आवश्यक होता है। कौशल विभिन्न प्रकार के होते हैं, जिनमें एक भाषा कौशल भी मुख्य है। भाषा कौशल तथ्यों, विचारों, भावों को प्रकट करने हेतु मुख्य माध्यम का कार्य करता है। भाषा विज्ञान अभिव्यक्ति का सैद्धांतिक पक्ष होता है जबकि भाषा कौशल व्यावहारिक पक्ष होता है।

**भाषा कौशल का अर्थ:** ऐसा कौशल जिसके द्वारा विचारों, भावों, तथ्यों, संवेदना तथा सूचना को अभिव्यक्त किया जाता है, "भाषा कौशल" कहलाता है। अन्य शब्दों में कहा जाए तो अभिव्यक्ति के माध्यम को "भाषा कौशल" कहते हैं। मानव की संप्रेषण क्षमता भाषा कौशल पर ही निर्भर करती है। भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति को कितनी क्षमता के साथ बोधगम्य बनाया जा सकता है, यह भाषा कौशल पर आधारित होता है। भाषा कौशल के अंतर्गत चार कौशलों - सुनना, पढ़ना, बोलना, लिखना को शामिल किया जाता है।

## भाषा कौशल की परिभाषाएं

डॉ. एस. के. देशपांडे के अनुसार - "भाषा शिक्षण का संबंध केवल ज्ञान प्रदान करना, सूचनाएँ प्रदान करना मात्र नहीं बल्कि भाषा सीखने वाले को इन चारों विविध कौशलों में दक्ष बनाना है। जैसे - सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। मुख्यतः भाषा से संबंधित दो कौशल हैं - एक 'प्रहण' व दूसरा 'अभिव्यक्ति'।

ग्रहण - सूनना (श्रवण कौशल) व पढना (पठन कौशल)।

**अभिव्यक्ति** - बोलना (वाचन कौशल) व लिखना (लेखन कौशल)।  
उपर्युक्त कौशलों को 'LSRW' के द्वारा संबोधित किया जाता है।

रॉबर्ट लाडो द्वारा अपनी पुस्तक भाषा शिक्षण में लिखा गया "स्पष्ट रूप से रुचिपूर्वक स्वस्वर वाचन करना एक कला पूर्ण कौशल ही है और यह कौशल सतताभ्यास का ही परिणाम होता है। लिखने की व्यवस्था का प्रयोग सदभ्यास व आदतों का परिणाम है। समस्त भाषा शिक्षण उच्चारण पर आश्रित है और भाषा की उच्चारण व्यवस्था भाषा विषयक आदत या आदतों पर। उच्चारण बोलने व सुनने में ध्वनि व्यवस्था का प्रयोग है अतः भाषा को सीखना नई आदतों के निर्माण व दृढ़ीकरण पर आश्रित है। यह नई आदतें भाषा संबंधी चारों क्षमताओं सुनना, बोलना पढ़ना तथा लिखना में विद्यार्थी को जब दक्ष बना दे तब समझना चाहिए कि अब विद्यार्थी ने भाषा सीख ली।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है की भाषा कौशल भावों, विचारों, तथ्यों संवेदनाओं आदि को अभिव्यक्त करने का एक माध्यम है, जिसमें सुनना (श्रवण), बोलना (वाचन), पढ़ना (पठन) तथा लिखना (लेखन) कौशल शामिल है।

## भाषा कौशल की विशेषताएं

1. भाषा कौशल अभिव्यक्ति का एक व्यावहारिक पक्ष है।
2. भाषा कौशलों का मुख्य आधार भाषा विज्ञान तथा व्याकरण है।
3. भाषा कौशल की प्रभाविकता की जांच कौशलों की शुद्धता एवं बोधगम्यता के आधार पर की जाती है।
4. भाषा कौशल के द्वारा शाब्दिक अंतःक्रिया का निर्माण होता है।
5. भाषा कौशल से संप्रेषण की क्षमता का विकास होता है।
6. भाषा कौशल बोधगम्यता का विकास करता है।
7. भाषा कौशल के अंतर्गत दो मुख्य प्रवाह -लिखना- पढ़ना तथा बोलना-सुनना आते हैं।
8. भाषा कौशल के मुख्य घटक पाठ्यवस्तु तथा अभिव्यक्ति है।
9. भाषा कौशल में प्रत्यक्षीकरण एवं मानसिक व्यवस्था भी आवश्यक है।
10. भाषा कौशल अर्जित किए जाते हैं अतः इसके लिए प्रशिक्षण तथा अभ्यास किया जाता है।
11. भाषा कौशल में मानसिक, शारीरिक कर्मेंद्रियां तथा ज्ञानेंद्रिय क्रियाशील होती है।
12. भाषा कौशल भावों विचारों व उनके संप्रेषण को सरल बनाता है।
13. भाषा कौशल संप्रेषण का मुख्य साधन व माध्यम है।

## भाषा कौशल के तत्व

भाषा कौशल के तत्व से आशय उन माध्यम से है जिनके द्वारा संप्रेषण का प्रवाह होता है यह तत्व निम्न प्रकार से है-

- (अ) पाठ्यवस्तु अथवा भाव -विचार  
(ब) अभिव्यक्ति अथवा संप्रेषण

भाषा कौशल के चारों कौशलों में इन्हीं तत्वों के द्वारा संप्रेषण प्रक्रिया होती है।

**पाठ्यवस्तु अथवा भाव -विचार:** इसके अंतर्गत बोलना तथा लिखना कौशलों का प्रयोग किया जाता है। इसमें 'पाठ्यवस्तु -अभिव्यक्ति' क्रम के आधार पर भाषा कौशल का प्रयोग होता है, इससे तात्पर्य यह है कि पहले व्यक्ति के मन में भाव तथा विचार आते हैं फिर उनकी अभिव्यक्ति हेतु बोलते हैं व लिखते हैं अतः इसमें बोलना वह लिखना कौशल मुख्य है।

**अभिव्यक्ति अथवा संप्रेषण:** इसके अंतर्गत सुनना तथा पढ़ना कौशलों का प्रयोग किया जाता है। इसमें 'अभिव्यक्ति -पाठ्यवस्तु' क्रम के आधार पर भाषा कौशल का प्रयोग होता है, इससे आशय यह है कि जब व्यक्ति बोलता या लिखता है तो अभिव्यक्ति तत्व प्रथम है जबकि भाव विचार को बोध करना द्वितीय होता है।

## भाषा कौशल का औचित्य

कोई भी भाषा कौशल एकल रूप से उपयोग नहीं किया जा सकता अपितु भाषा कौशलों को युगल रूप से प्रयुक्त किया जाता है, जिसके फलस्वरूप संप्रेषण प्रवाह उत्पन्न होता है, इसी संप्रेषण प्रवाह के द्वारा व्यक्ति स्वयं के विचारों, भावों, संवेदनाओं आदि का आदान-प्रदान करता है।

**महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय:** ऐसे राजकीय विद्यालय जिनके माध्यम अंग्रेजी भाषा है, 'महात्मा गांधी' (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालय के रूप में जाने जाते हैं। यह विद्यालय राजस्थान सरकार द्वारा वर्ष 2019 में हिंदी माध्यम राजकीय विद्यालयों को परिवर्तित कर बनाए गए हैं। कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,

बीकानेर द्वारा प्रस्तुत निर्देश पत्र में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर प्रत्येक जिला मुख्यालय के 33 विद्यालयों को महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय अंग्रेजी माध्यम में रूपांतरित किया जाने की शासकीय स्वीकृति प्रदान की गई। जिसके तहत शैक्षणिक सत्र 2019-20 से यह विद्यालय प्रारंभ किए गए। इन विद्यालयों में कक्षा 1 से 12वीं तक के समस्त विद्यार्थियों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा हेतु अंग्रेजी विषय का ज्ञान दिए जाने की व्यवस्था की गई है। प्रस्तुत शोध कार्य में जयपुर जिले, राजस्थान के महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

## निष्कर्ष:

प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि महात्मा गांधी (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालय विद्यार्थियों की भाषा कुशलता को विकसित करने में महत्वपूर्ण है। विद्यालय में अध्ययन - अध्यापन के माध्यम को हिंदी भाषा से अंग्रेजी भाषा में परिवर्तित करने के फलस्वरूप विद्यार्थियों में अंग्रेजी भाषा से संबंधित ज्ञान तथा अंग्रेजी भाषा में विषय वस्तु को सुनने, बोलने, पढ़ने तथा लिखने में सरलता होती है तथा व्यावहारिक वार्तालाप में भी अंग्रेजी भाषा का प्रयोग कर पाते हैं। राजकीय विद्यालय का अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा प्रदान करने का प्रयास विद्यार्थियों को भावी प्रतियोगी परीक्षा के लिए तैयार करने में सहयोग करता है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य में महात्मा गांधी (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालयों का महत्वपूर्ण योगदान है।

## संदर्भ सूची:

### पुस्तकें:

1. अग्रवाल, संधा (2005), शिक्षा मनोविज्ञान, वाराणसी, विजय प्रकाशन मंदिर
2. कपिल, एच. के. (2006), अनुसंधान विधियां, आगरा, एच.पी.भार्गव बुक हाउस
3. जैन, बी. एल.; तोमर, नित्या; जैन, अमिता; नागर अल्पा (2015), पाठ्यक्रम से पार भाषा, जयपुर, शिक्षा प्रकाशन
4. पांडेय, रामशक्ति (2007), शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ, आर लाल बुक डिपो
5. पाठक, पी. डी. (2006), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा -2, विनोद पुस्तक मंदिर
6. भार्गव, महेश (2006), आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण मापन, आगरा, एच.पी. भार्गव बुक हाउस
7. भट्टनागर, ए. बी.; भट्टनागर, अनुराग (2013), शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, मेरठ, आर लाल बुक डिपो
8. शर्मा, राजकुमारी; दुबे, एसके; तिवारी, अंजना (2015), पाठ्यक्रम के परे भाषा, आगरा, राधा प्रकाशन मंदिर (प्रा.)लि.
9. शर्मा, सत्यनारायण; गोस्वामी, नव प्रभाकर (2016), पाठ्यक्रम के पार भाषा, जयपुर, आस्था प्रकाशन
10. शर्मा, एस. एन.; भार्गव, विवेक (2006), मनोविज्ञान एवं शिक्षा में प्रयोग एवं प्रशिक्षण, आगरा, एच.पी.भार्गव बुक हाउस
11. सरीन, शशिकला; सरीन, अंजलि (2013), शैक्षिक अनुसंधान विधियां (सांख्यिकी सहित), आगरा-2, अग्रवालपब्लिकेशंस
12. सक्सेना, बीनू; सक्सेना, मालती; पुरीहित, प्रतिष्ठा (2016), पाठ्यक्रम एवं भाषा, आगरा, राधा प्रकाशन मंदिर
13. सिंह, रामपाल; शर्मा, ओ. पी. (2005), शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, आगरा-2, विनोद पुस्तक मंदिर

## शोध प्रबंध/शोध पत्र

1. मलिक, स्वप्ना (2012), दक्षिण भारत में हिंदी भाषा के कौशल शिक्षण के संदर्भ में प्रचलित वर्तमान प्रविधियां: एक आलोचनात्मक अध्ययन (बेंगलुरु महानगर के उच्च माध्यमिक

- विद्यालयों के कन्नड भाषी छात्रों के विशेष संदर्भ में), पी.एच.डी. शोध,भाषा प्रौद्योगिकी विभाग, भाषा विद्यापीठ,महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा (महाराष्ट्र).<http://hdl.handle.net/10603/3495>
2. शर्मा, शशि A Comparative Study of English Communication Skill of Students Studying in Government and Private school, Journal of Indian Research. 2013; 1 (2):125-132, ISSN:2321-4155
  3. रेनू विद्यार्थियों में हिंदी भाषा में प्रवीणता के लिए कौशलों का महत्व, Journal of Emerging Technology and Innovative Research (JETIR). 2019; 6 (1). ISSN:2349-5162
  4. खासौच, मोहम्मद; अहमद, सलीम language skills and their relationship to learning difficulties in English language from the students point of view, SHANLAX (International Journal of education). 2021; 9 (4). ISSN:2582-1334,[www.shanlaxjournals.com](http://www.shanlaxjournals.com)
  5. सैयद, तौकीर इमाम (2023) क्रिटिकल थिंकिंग एंड लिविंस्टिक्स एबिलिटीज एल.एस.आर.डब्ल्यू.ऑफ चिल्ड्रन इन मदरसा एट वेस्ट बंगाल, पीएचडी शोध,शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग, मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद, तेलंगाना,<http://hdl.handle.net/10603/57669>
  6. गोगोई, नम्रता (2024) इफेक्टिवेनेस ऑफ टास्क बेस्ड लैंग्वेज टीचिंग इन डेवलपिंग लैंग्वेज स्किल्स इन इंग्लिश अमंग क्लास 8th स्टूडेंट,पीएचडी शोध,शिक्षा विभाग,तेजपुर यूनिवर्सिटी, तेजपुर, <http://hdl.handle.net/10603/581789>